अन्य जन प्रतिनिधियों के साथ सम्मान और शिष्ट व्यवहार करने का सख्त अनुदेश है।

(ग) और (घ) एक अपर निजी सचिव ने कुछ निजी कारणों से अपने मूल विभाग में वापस जाने का अनुरोध किया था और उनका अनुरोध मान लिया गया था तथा उन्हें 23 अप्रैल, 1998 को कार्यमुक्त कर दिया गया था।

**देश में स्थित आई॰डी॰पी॰एल॰ एकक**

1976. **प्रो॰ राम बख्श सिंह वर्मा:** क्या रसायन और उर्वरक मंत्री यह बताने की कृपा करेंगे कि:

(क) देश में किन-किन स्थानों पर आई॰डी॰पी॰एल॰ एकक स्थापित हैं और उनका ब्यौरा क्या है;

(ख) इनमें से कितने एककों में उत्पादन हो रहा है और कितने एकक बन्द पड़े हैं, और

(ग) पहले तीन वर्ष के दौरान आई॰डी॰पी॰एल॰ को हुए लाभ/घाटे का वर्ष-वार ब्यौरा क्या है?

**रसायन और उर्वरक मंत्रालय में राज्य मंत्री (डा॰ ए॰ के॰ पटेल):** (क) आई॰डी॰पी॰एल॰ की इकाइयां ऋषिकेश (उत्तर प्रदेश), हैदराबाद (आन्ध्र प्रदेश), गुड़गांव (हरियाणा), मुजफ्फरपुर (बिहार) और चेन्नई (तमिलनाडु) में स्थित हैं। ऋषिकेश इकाई एक एंटिबायोटिक प्लांट है जिसे प्रपुज एंटिबयोटिक्स बनाने के लिए तैयार किया गया है और यह 1968 में शुरू किया गया था। हैदराबाद इकाई सिन्थेटिक औषध तैयार करने के लिए बनाया गया है और यह 1967 में आरंभ किया गया था। गुड़गांव इकाई एक सूत्रयोग इकाई है। इसे टिकिया और लिक्विड ओरल के लिए 1979 में तथा इन्जेक्टेबल्स के लिए 1980 में आरंभ किया गया था। मुजफ्फरपुर प्लांट को एसिटा-डिहाईड/एसिटक एसिड के उत्पादन के लिए नवम्बर, 1979 में और निकोटनामाइड के उत्पादन के लिए दिसम्बर, 1980 में शुरू किया गया था। यह इकाई 1.4.1994 से बिहार ड्रग्स एंड आर्गेनिक केमिकल्स लिमिटेड के नाम में आई॰डी॰पी॰एल॰ की पूर्ण स्वामित्व वाली सहायक कंपनी के रूप में बदल दी गयी है। चेन्नई में शल्य चिकित्सा उपकरण और सूत्रयोग यूनिट अब केवल शल्य चिकित्सा उपकरण बना रही है। यह यूनिट भी 1.4.1994 से आई॰डी॰पी॰एल॰ (तमिलनाडु) के नाम में आई॰डी॰पी॰एल॰ की पूर्ण स्वामित्व वाली सहायक कंपनी में बदल दी गई है।

(ख) ऋषिकेश, हैदराबाद और गुड़गांव की आई॰डी॰पी॰एल॰ इकाइयों में अक्तूबर, 1996 से उत्पादन बन्द हो गया है। सयंत्रों के केवल उत्पाद अग्रिम के लिए अत्यावश्यक उत्पादन हो रहा है। आई॰डी॰पी॰एल॰ (तमिलनाडु), पूर्ण स्वामित्व वाली कंपनी में निम्नतर पैमाने पर उत्पादन हो रहा है जबकि मुजफ्फरपुर स्थित पूर्ण स्वामित्व वाली कम्पनी में उत्पादन नहीं हो रहा है।

(ग) (रुपए लाख में)

| वर्ष | कुल लाभ/(हानि) | शुद्ध लाभ/(हानि) |
|---|---|---|
| 1965-66 | 35 | (56) |
| 1966-67 | 117 | (35) |
| 1967-68 | 70 | (232) |

**रसायनों और उर्वरकों के उत्पादन में आत्मनिर्भरता**

1977. **श्री दिलीप सिंह भूदेव:**
**श्री अखिलेश दास:**

क्या रसायन और उर्वरक मंत्री यह बताने की कृपा करेंगे कि:

(क) क्या देश ने अब तक रसायन और उर्वरक उत्पादन में आत्मनिर्भरता हासिल नहीं की है,

(ख) क्या सर्वाधिक मांग और कम आपूर्ति के बीच के अन्तर को पाटने और उर्वरक उद्योग को प्रोत्साहित करने के लिए कोई विशेष लक्ष्य निर्धारित नहीं किए गए हैं,

(ग) क्या सरकार आज भी आयातित यूरिया पर निर्भर है जिसके परिणामस्वरूप राजकोषीय धन में कमी आ रही है, और

(घ) क्या सरकार ने देश को यूरिया के उत्पादन में स्वावलम्बी बनाने के लिए कोई दीर्घकालिक योजना तैयार की है?

**रसायन और उर्वरक मंत्रालय में राज्य मंत्री (डा॰ ए॰ के॰ पटेल):** (क) से (घ) देश ने मूल रसायनों के मामले में लगभग आत्मनिर्भरता प्राप्त कर ली है किन्तु कुछ विशिष्ट रसायनों का आयात करना पड़ता है।

उर्वरक के क्षेत्र में 1997-98 के दौरान उर्वरकों का स्वदेशी उत्पादन संयुक्त रूप से नाइट्रोजन तथा फास्फेट न्यूट्रिएंट्स की अनुमानित खपत का लगभग 86.6 प्रतिशत होने का अनुमान लगाया गया था। पोटाश न्यूट्रिएंट्स की समस्त आवश्यकता को आयात करके पूरा करना होगा क्योंकि देश में पोटाश के वाणिज्यक दोहन के लिए कोई ज्ञात भण्डार नहीं हैं।